


---

## dashAvatArastotram 3

——  
दशवतारस्तोत्रम् ३

——  
Document Information



---

Text title : dashAvatArastotram 3

File name : dashAvatArastotram3.itx

Category : vishhnu, dashAvatAra, shankarAchArya, vishnu

Location : doc\_vishhnu

Author : Shankaracharya

Transliterated by : Nat Natarajan nat.natarajan at gmail.com

Proofread by : Nat Natarajan nat.natarajan at gmail.com, NA

Description-comments : From Brihatstotraratnakara with 408 stotras

Latest update : June 5, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



दशावतारस्तोत्रम् 3



थलल्लोलकल्लोलकल्लोलिनीशङ्कुरन्नङ्गयङ्गातिवङ्गाम्बुलिः ।  
उतो येन भीनावतारेण शङ्खः स पायादपायाज्जगद्वासुदेवः ॥ १ ॥

धरानिर्जरारातिभारादपारादङ्कूपारनीरातुराधः पतन्ती ।  
धृता कुर्मरुपेण पृष्ठोपरिष्ठे सदेवो भुटे वोस्तु शेषाङ्गशायी ॥ २ ॥

उद्रग्रे रदाग्रे सगोत्रापि गोत्रा स्थिता तस्थुषः केतकाग्रे षडङ्घ्रैः ।  
तनोति श्रियं सश्रियं नस्तनोतु प्रभुः श्रीवराडावतारो मुरारिः ॥ ३ ॥

उरोदार आरम्भसंरम्भिणोसौ रमासम्भ्रमाभङ्गुरात्रैर्नभात्रैः ।  
स्वभक्त्यातिभक्त्याभिव्यक्तेन दारुण्यधौघं सदा वः स डिंस्यात्सिंहः ॥ ४ ॥

छलादाकलय्य त्रिवोडीं बलीयान् बलिं सम्भवन्ध त्रिवोडीबलीयः ।  
तनुत्वं धधानां तनुं सन्धधानो विमोहं मनो वामनो वः स कुर्यात् ॥ ५ ॥

उतक्षत्रियासृक्प्रपानप्रनृत्तममृत्यत्पिशाचप्रगीतप्रतापः ।  
धराकारि येनाग्रजन्माग्रदारं विदारं डिगन्मानसे वः स रामः ॥ ६ ॥

नतग्रीवसुग्रीव-साम्राज्यछेतुर्दशग्रीव-सन्तान-संदारकेतुः ।  
धनुर्धेन भग्नं मल्लामलन्तुः स मे जानकीजानिरेनांसि उन्तु ॥ ७ ॥

धनाद्गोधनं येन गोवर्धनेन व्यरक्षि प्रतापेन गोवर्धनेन ।  
उतारातियङ्की रणध्वस्तयङ्की पदध्वस्तयङ्की स नः पातु यङ्की ॥ ८ ॥

धराभद्रपद्मासनस्थाङ्घ्रियष्टिर्नियम्यानिवं न्यस्तनासाग्रदृष्टिः ।  
य आस्ते कलौ योगिनां यङ्कवर्ती स भुद्दुः प्रभुद्दोऽस्तु निश्चिन्तवर्ती ॥ ९ ॥

दुरापारसंसारसंसारकारी भवत्यश्ववारः कृपाणप्रहारी  
मुरारिर्दशाकारधारीऽ कल्की करोतु द्विषां ध्वंसनं वः स कल्की ॥ १० ॥

एति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं दशावतारस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Nat Natarajan, NA

---

*dashAvatArastotram 3*

pdf was typeset on December 22, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

